दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन (1985-2015)

पीएच.डी.(हिंदी) उपाधि हेतु
शोध विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी
मुहम्मद अनीस

सह-शोध निर्देशिका
डॉ. नमस्या
असो. प्रोफेसर

शोध निर्देशक
डॉ. सूरज प्रकाश बड़त्या
असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग,कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा -282005

2022

शोध विषय का परिचय-

प्रस्तावित शोधकार्य 'दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' विषय कई दृष्टियों से एवं व्यापक अर्थो में विशिष्ट महत्व का शोधकार्य होगा। प्रस्तावित शोधकार्य के अन्तर्गत दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के हिन्दी कथा-साहित्य के कथ्य एवं शिल्प का गहनता एवं समग्रता के साथ अध्ययन किया जायेगा। साहित्य की विधाओं में कथा-साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी और उपन्यास विधा के योग को कथा-साहित्य कहा जाता है। हिन्दी में कथा-साहित्य की शुरूआत आधुनिक युग से मानी जाती है। कथा-साहित्य को आधुनिक समय की सबसे प्रगतिशील विधा कहा जाता है, इससे साहित्य की धारा में भी परिवर्तन आया। काव्य तथा महाकाव्य की वस्तु संरचना उच्च कोटि के उदात्त नायकों के इर्द-गिर्द अधिकतर बुनी जाती है लेकिन कथा-साहित्य में ऐसी बात नहीं है । आधुनिक समय में कथा-साहित्य के लेखन की शुरूआत को साहित्य की दुनिया में लोकतन्त्र की शुरूआत माना जा सकता है। कथा-साहित्य में आम आदमी को विषय -वस्तु बनाकर लिखा जाना प्रारम्भ हुआ, इसके पहले के साहित्य में मुख्य पात्र अधिकतर केवल अभिजात्य वर्ग से होते जब कि आज कथा-सहित्य में स्त्री, दलित, मुस्लिम, आदिवासी, किसान, मजदूर, आम आदमी आदि कोई भी केन्द्र में हो सकता है।

कथा-साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है बल्कि यह यथार्थ के चित्रण एवं सम्प्रेषण का माध्यम भी है। कथा-साहित्य समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को बदलते मानवीय दृष्टिकोणों को उजागर करने में सक्षम होता है। किसी भी समाज में परिवर्तन होना निश्चित रूप से एक अनिवार्य स्थिति है क्योंकि परिवर्तन एक प्राकृतिक नियम है, जिसका असर मानव समुदाय पर किसी न किसी रूप में होता हैं। परिवर्तन की यह प्रकिया आधुनिक मानव समाज में तब्दील हुई और बौद्धिक तथा लेखन की दुनिया में कहानी और उपन्यास के रूप में विकसित हुई, जिसे कथा-साहित्य कहा गया। कथा-साहित्य का समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध है और कहा भी जाता है कि 'साहित्य समाज का दर्पण है।` **बालकृष्ण भट्ट** ने भी लिखा है कि **"साहित्य जनसमूह के ह्रदय का विकास है"।**

कथा-साहित्य में जो भी वैचारिक विमर्श सामने आता है उसमें कथाकार के जीवनानुभव भी निहित होते हैं। लेखक के जीवनानुभव का संसार इतना व्यापक है कि वह सामाजिक प्रकिया के निर्धारण में अपनी रचना में तरह-तरह के भोगे हुए, जिए हुए जीवन के चरित्रों का निर्माण करने लगता है। इतिहास के पन्नों में प्रायः पुरुषों की हार-जीत को ही अंकित किया गया है, कुछ अपवादों को छोड़कर। **वर्जिनिया वुल्फ़** के शब्दों में हैं तो **'इतिहास में जो कुछ अनाम है वह औरतों के नाम हैं।** उपलब्ध साहित्य स्त्रियों की दशा में अनेक भेद खोलता है। प्रारम्भिक साहित्य स्त्रियों की उपस्थिति में लगभग मौन दिखाई देता है। किसी भी देशकाल और समाज में स्त्रियों की दशा पूर्णतः स्वतन्त्र और समान नहीं है। दलित और मुस्लिम समुदाय में यह स्थिति अत्यधिक चिन्ताजनक है। भारतीय परिदृश्य में दलित और मुस्लिम स्त्रियों की दशा में अधिक भिन्नता नहीं है। अधिकार और विचार के किसी भी स्तर पर उनकी स्वतन्त्रता और समानता की बात तो दूर कई बार तो उन्हें सामान्य जीवन जीने की स्थितियां भी नसीब नहीं होती। इस जीव जगत में उनसा कठजीवी दूसरा प्राणी मिलना असम्भव है। अपने तमाम श्रम, सृजन, संवेदना, निष्ठा और अस्तित्व को उपेक्षित किये जाने के बावजूद कर्तव्य पथ पर निरन्तर सक्रिय उनसा कर्मयोगी मिलना मुश्किल है। जिसके होने से दुनिया का अस्तित्व है और जो अपने अस्तित्व को मिटाकर भी दुनिया का सृजन करने का माद्दा रखती है, किसी भी सभ्य समाज में उसकी अवहेलना चिन्तनीय ही नहीं निन्दनीय भी है।

भारत में 20वीं0 शताब्दी का पूरा दौर सामाजिक बदलाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, लम्बे संघर्ष के बाद अंग्रेजी हुकूमत से 15 अगस्त 1947 ई0 में देश को आजादी मिली लेकिन साथ ही न भूलने वाली एक त्रासदी के रूप में देश का बंटवारा हुआ। आजादी के बाद भारतीय समाज में आज भी अनेक नई-पुरानी समस्याएँ विकराल रूप में विद्यमान है, जैसे-जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषा, धार्मिकता, पितृसत्ता, साम्प्रदायिकता, वर्ण-व्यवस्था, मुसलमानों की त्रासदी, सदियों से शोषित, पीड़ित स्त्री और दलित वर्ग की पीड़ा तथा स्थिति और इसके अलावा बाजारवाद, उपभोक्तावाद, भूमण्डलीयकरण आदि,।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ-साथ नारी जागरण और स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ, जिस तरह आजादी के साथ समाज के दूसरे क्षेत्रों में विविध रूपों में परिवर्तन हुआ, उसी तरह परिवर्तन दलित और मुस्लिम लेखिकाओं की गुणात्मक एवं संख्यात्मक वृद्धि के रूपों में देखा जा सकता है। आजादी से पहले सामान्यतः नारी का मुख्य कार्य क्षेत्र घर की चार दीवारी के अन्दर ही था परन्तु राष्ट्रीय आन्दोलनों और शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नारी ने घर से बाहर निकलना शुरू किया और मर्यादाओं तथा आदर्शो की खोज से युक्त, मुक्ति-संघर्ष की अभिव्यक्ति, नारी की अस्मिता की पहचान एवं नारी-मुक्ति के लिए लिखना प्रारम्भ किया।

स्वतन्त्रता पश्चात अथवा सातवें एवं आठवें दशक में आधुनिक कथा-साहित्य में अनेक दलित एवं मुस्लिम लेखिकाओं की उपस्थिति बड़े सशक्त रूप में उभरकर सामने आयी है। मानव समाज और जीवन को समग्र रूप में चित्रित करने के सम्बन्ध में लेखिकाओं की भूमिका उतनी ही अहम है, जितनी कि लेखकों की। वर्तमान दलित और मुस्लिम लेखिकाओं में **कौशल्या बैसंत्री, कुसुम मेघवाल, सुशीला टाकभौरे, रजत रानी 'मीनू', रजनी दिसौदिया, अनीता भारती, नासिरा शर्मा, मेहरून्निसा परवेज, शहनाज फातमी, बानो सरताज, हुस्न तबस्सुम 'निहां'** आदि के नाम सरेफेहरिश्त है। इन सब में कुछ न कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनके बल पर इन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य में अपनी लेखनी के माध्यम से विशिष्ट स्थान बनाया और हिन्दी कथा-साहित्य को नया तेवर एवं मुहावरा दिया तथा नये मापदण्ड स्थापित किये, इसी दौर में 'दलित' शब्द व्यापक रूप से प्रचलन में आया था। **प्रेम कुमार मणि** ने कहा कि- **"दलितों के द्वारा दलितों के लिए लिखा जा रहा साहित्य दलित साहित्य है"।**

दलित लेखिकाओं ने अपनी लेखनी एवं आन्दोलनों के माध्यम से अपनी मुक्ति-संघर्ष, नारी की अस्मिता, एवं अस्तित्व को बनाने हेतु ब्राहमणवाद का, वर्ण-व्यवस्था का, सामाजिक दुर्व्यवस्था का, जात-पात का विरोध करते हुए महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ अम्बेडकर के दर्शन को अपना कर लेखन किया और दलित व स्त्री चेतना को जागृत किया। अब भी अपने सृजनात्मक और आक्रोशित स्वर को अपनी लेखनी के ज़रीए यथार्थ की भूमि पर खड़ा करके बदलाव के नये आयाम स्थापित कर रहीं हैं।

दलित लेखिका रजत रानू 'मीनू' ने 2012 में प्रकाशित **'हम कौन हैं?'** कहानी-संग्रह में अम्बेडकरवादी विचारधारा की सशक्त अभिव्यक्ति की है। इस कहानी-संग्रह में वर्ण-व्यवस्था, स्त्री शोषण तथा जाति अहंकार की भावना को अभिव्यक्त किया है साथ ही सामाजिक दुर्व्यवस्था द्वारा शोषित, पीड़ित, निम्न जातियों को आत्मालोचन के लिए प्रेरित किया है।

वर्तमान समय की सामाजिक व्यवस्था तथा जातिगत ऊँच-नीचता का और शोषण के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण **रजत रानी 'मीनू'** ने अपने कथा-साहित्य में किया है| जैसे -'**फरमान**' कहानी में जाति-व्यवस्था द्वारा शोषित 'कर्मवीर' जैसे लाखों निम्न जाति के मनुष्य का दुख-दर्द व्यक्त किया है। जातिगत ऊँच-नीचता की भावना जिस तरह से स्वर्ण वर्ग से निम्न, पिछड़ी जातियों में संक्रमित हुई है उसी तरह स्त्री-पुरूषगत ऊँच-नीचता भी स्वर्ण समाज की देन है। रजत रानी 'मीनू' ने **'सुनीता'** कहानी के माध्यम से पुरूषों का स्त्रियों के प्रति प्रतिगामी दृष्टिकोण, भारतीय जाति-व्यवस्था तथा पुरूष प्रधान व्यवस्था को उजागर किया है।

रजत रानी 'मीनू' ने '**वेदिन', 'धोखा**' आदि कहानियों में सदियों से स्त्री शोषण, अन्याय और अत्याचार की दास्ताँ का मार्मिक चित्रण किया है। इसके अलावा 'मिठ्ठू की विरासत' कहानी में सदियों के दलितों की अस्पृशीयता, शोषण और अपमान से भरी जिन्दगी का यथार्थ वर्णन किया है। इन्होंने अपनी और भी रचनाओं में दलित समाज व स्त्रियों की दशा को तथा भारतीय जाति व्यवस्था को अभिव्यक्त किया है।

दलित लेखिका सुशीला टाकभौरे दलित साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिका एवं विचारक हैं। दलित व स्त्री विमर्श के लेखिकाओं में इनका उच्चतम स्थान है। इनके लेखन में साहित्य और समाज के बुनियादी सरोकारों पर बल दिखाई पड़ता है। इनके कथा-साहित्य में दलित समाज, दलित स्त्री व हाशिये पर रहे लोगों का मार्मिक चित्रण यथार्थ स्थिति पर दृष्टिगत होता है। यथार्थ को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त करने में सुशीला टाकभौरे सिद्धहस्त है। इनका व्यक्तित्व बहुआयामी और विलक्षण से युक्त है।

सुशीला टाकभौरे ने 'नीला आकाश', 'तुम्हें बदलना ही होगा' आदि उपन्यासों में अन्तर्जातीय विवाह पर जोर दिया है। इसके अलावा इन्होंने अपने कथा-साहित्य में दलितों के संघर्ष, शोषण, रीति-रिवाज, महिला चेतना

एवं सामाजिक विसंगतियों और नारी मुक्ति के स्वर को मुखरित किया है। इनकी मुख्य रचनाओं में **नीला आकाश, हमारे हिस्से का सूरज, तुमने उसे कब पहचाना, नंगा सत्य, रंग और व्यंग्य, संघर्ष, शिकंजे का दर्द, टूटता वहम, अनुभूति के घेरे तथा तुम्हें बदलना ही होगा आदि का विशेष महत्व है।**

वहीं आज मुस्लिम लेखिकाएँ (नासिरा शर्मा, मेहरून्निसा परवेज, हुस्न तबस्सुम 'निहाँ', शहनाज़ फातमी आदि) पारम्परिक रूढ़िवादी सोच को चुनौती देती हुई पूरे साहस के साथ लिख रहीं है। मुस्लिम समाज की बहुरंगी तस्वीरें उजागर कर रहीं हैं। इनके हिन्दी कथा-साहित्य में न केवल मुस्लिम जीवन का दिल धड़कता है बल्कि उस दिल में जिन्दगी के लिये जिम्मेदाराना मूल्य व्यवस्था भी उभरकर सामने आयी हैं। इन्होंने बड़ी बेबाकी से मुस्लिमों की दुर्गति, सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था की गड़बड़ी तथा स्त्रियों की मार्मिक स्थिति आदि का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है, साथ ही समाज में व्याप्त कुप्रथा, शोषण और अनीति तथा धार्मिक कट्टरता के खिलाफ अपने जुझारूपन को विशेष अहमियत देते हुए कथा-साहित्य की सउद्देश्यता को सही मुकाम दे रहीं हैं।

मुस्लिम लेखिका नासिरा शर्मा ने अधिकांश कथा-साहित्य में नारी की समस्याओं को उजागर करते हुए स्त्री जाति के अस्तित्व के मुद्दे पर लेखन किया है। इसके अलावा इन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से प्रेम, संघर्ष, साम्प्रदायिकता, नारी-शोषण, नारी-मुक्ति, नारी की सामाजिक स्थिति, व्यवहार, राजनीतिक हलचल, आदि को अभिव्यक्त किया है, इनका दृष्टिकोण वैश्विक है।

नासिरा शर्मा ने '**शाल्मली**' उपन्यास में घर और बाहर अपने अधिकार मांगती आजादी के बाद की उभरती एक अलग किस्म की स्वतन्त्रचेता स्त्री को दिखाया है, जो संवाद चाहती है, बराबरी का दर्जा चाहती है, प्रेम की मांग करती है, जो उसका हक है। **शाल्मली** एक स्थान पर कहती है कि-'**मैं पुरूष विरोधी न होकर अत्याचार विरोधी हूं, मेरी नजर में नारी मुक्ति और स्वतंत्र समाज की सोच स्त्री की स्थिति को बदलने में है'।**

नासिरा शर्मा का चर्चित उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' मुस्लिम समाज की उस स्थिति को अथवा सच्चाई को उजागर करता है जहां स्त्रियों की स्थिति अपमानजनक और बदतर दिखाई पड़ती है। लेखिका ने इस उपन्यास में स्त्री की यौन समस्या के साथ-साथ जीवन के अनेक प्रश्नों को जैसे पुरूषवादी मानसिकता, स्त्रियों के प्रति

अवसरवादी दृष्टि आदि को बड़े पुरजोर ढंग से प्रस्तुत किया है| इसके अलावा नासिरा शर्मा ने 'जिन्दा मुहावरे' रचना के अन्तर्गत भारत विभाजन की त्रासदी की भयावह परिणति को उजागर किया है। 'सात नदियां एक समंदर' रचना में ईरानी क्रांति के सन्दर्भ में लिखा है तो वहीं 'अक्षयवट' में इलाहाबाद शहर के प्रति विशेष लगाव को देखते हुए पुलिस की नकारात्मकता और शहर की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का अंकन किया है। इनकी प्रमुख रचनाओं में **शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, जिन्दा मुहावरे, सात नदियां एक समन्दर, अक्षयवट, कुईयांजान, परिजात, कागज की नांव, पत्थर की गली, इंसानी नस्ल, खुदा की वापसी, दूसरा ताजमहल, इब्ने मरियम, सबीना के चालीस चोर, शामी कागज़** आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मुस्लिम लेखिका मेहरून्निसा परवेज के कथा-साहित्य का फलक अत्यन्त विशाल है। जीवन का शायद ही कोइ ऐसा पहलू हो जो उनकी पहुंच से अछूता हो। यह हिन्दी कथा-साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की सशक्त लेखिका हैं। इनकी रचनाओं में मुस्लिम जीवन, नारी की दयनीय स्थिति, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि का लेखा जोखा है, इसके अलावा इन्होंने वैवाहिक जीवन की समस्याओं, कार्यरत नारी की समस्याओं, बेरोजगारी आदि का भी अपने कथा-साहित्य में विस्तार पूर्वक चित्रण किया है।

मेहरून्निसा परवेज के **'कोरजा'** उपन्यास की सबसे सशक्त नारी नानी मां है। वह सहृदय, सहनशील, संवेदनशील, तथा सहज स्वभाव की बुढ़िया हैं। मजबूरी में वह अपने गिरवीं रखे मकान के बदले अपनी विधवा बेटी नसीमा को मुनीम की हवस का शिकार होते देखती हैं लेकिन कुछ कर नहीं पाती। एक स्थान पर **'नसीमा'** कहती है कि-'माँ **रोज पूजा में ढेरों उलाहने भगवान को देती है और मैं खड़ी उन उलाहनों को वापिस मांग लेती हूं, दुख सहते-सहते ऐसी आदत पड़ गयी है कि अगर एक दिन भी वह हमसे जुदा हो तो घबराहट होने लगती है'।**

मेहरून्निसा परवेज के '**उसका घर'** उपन्यास की एलमा को अपने स्वार्थी भाई के बॉस के सामने विवश होकर बार-बार समर्पण करना पड़ता है। **एलमा की बुआ** उस पर तरस खाकर कहती है कि - **'तू कब तक सहेगी ऐनी, मैं जानती हूं तू कभी विरोध नहीं करेगी, लेकिन तेरा इतना सुन्दर शरीर यह कष्ट उठाने के लिए नहीं है'।** इस तरह हम देख सकते हैं कि मेहरून्निसा परवेज ने मुस्लिम स्त्रियों की तकलीफ, उनकी झटपटाहट, स्त्री-शोषण,

स्त्री विवशता का मार्मिक चित्रण किया है। इनकी मुख्य रचनाओं में **आंखों की दहलीज, कोरजा, उसका घर, अकेला पलाश, समरांगण, पासंग, आदम और हव्वा, टहनियों पर धूप, फाल्गुनी, गलत पुरूष, ढहता कुतुबमीनार, रिश्ते, अम्मा, समर,** आदि के नाम उल्लेखनीय है।

प्रस्तावित शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण व अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दी कथा-साहित्य में दलित एवं मुस्लिम लेखिकाओं द्वारा अभिव्यक्त विचार, सामाजिक व्यवस्था, पितृ सत्तात्मकता, रूढ़ि-परम्परा, स्त्री शोषण, नारी मुक्ति संघर्ष, व्यवहारिकता, जाति-भेद, लिंग-भेद, वर्ण-व्यवस्था, स्त्री की यौन समस्या, दहेज प्रथा, आदि में काफी कुछ समानताएँ हैं लेकिन वहीं काफी कुछ असमानताएँ, जैसे - धार्मिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रथाऐं, भाषा का स्वरूप, कथ्य और शिल्प, जातिवादिता, रस्मों-रिवाज आदि भी दिखाई देती हैं।

आज 21वीं0 शताब्दी में दलित और मुस्लिम लेखिकाएँ सामाजिक व्यवस्था को तथा नारी जीवन एवं मुक्ति संघर्ष को जिस प्रकार व्यक्त कर रहीं हैं, वह जमीनी स्तर पर कितना दृष्टिगोचर है, उसका समग्रता एवं गहनता के साथ विभिन्न पहलुओं के ज़रिए जीवन के समग्र परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखकर अध्ययन किया जायेगा। 'दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' मेरा शोध विषय है, जो नया और मौलिक शोध कार्य होगा।

प्रस्तावित शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन -

आए दिन अखबारों अथवा समाचारों तथा आसपास घटित घटनाओं में दलित और मुस्लिम समाज व स्त्रियों की स्थितियां जो दृष्टिगोचर होती सुनी हैं अथवा देखी हैं, और इनसे सम्बन्धित साहित्य पढ़ा जिससे मेरा मन बहुत उद्धेलित एवं प्रेरित हुआ। इस वजह से 'दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' को अपने शोधकार्य का विषय बनाया है ताकि दलित और मुस्लिम समाज व स्त्रियों की स्थिति को और भी अच्छे से जान सकूं, लोगों को परिचित करा सकूं तथा उनके कथा-साहित्य की अभिव्यक्ति के कथ्य तथा शिल्प का विश्लेषण करके उन्हें उजागर कर सामाजिक पाठक एवं आमजन से रूबरू करा सकूं।

प्रस्तावित शोध विषय का उद्‌देश्य -

प्रस्तावित शोध विषय का उद्‌देश्य दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य के कथ्य तथा शिल्प को उद्‌घाटित करना अर्थात लेखिकाओं के समाज तथा साहित्य के प्रति वैचारिक दृष्टिकोण का विश्लेषण कर समझना एवं व्यक्त करना तथा दलित और मुस्लिम स्त्रियों के सामाजिक जीवन व स्थिति को उजागर करना।

दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त पुरूष प्रधान व्यवस्था, रूढ़ि-परम्परा, अन्ध-विश्वास, सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति, नारी-जीवन संघर्ष, शिक्षा-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, तथा सामाजिक बन्धनों के नाम पर शोषित, पीड़ित नारी की दुःखी व दयनीय स्थिति का जिस प्रकार ज़िक्र है उसका गहन एवं समग्र दृष्टिकोण से विभिन्न शैलियों के ज़रिए अध्ययन कर यथार्थ स्थल पर चित्रण करना है!

दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के जीवनानुभव को समेटकर सुखद भविष्य की उम्मीद को जीवन्त बनाने के प्रयास हेतु सामाजिक पाठक एवं आम-जन से परिचित कराना है जिससे लोगों का पुरूष प्रधान व्यवस्था, जाति-भेद, लिंग-भेद, वर्ण-व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, स्त्री के प्रति रूढ़िवादी मानसिकता और शिक्षा-व्यवस्था आदि में सुधार कर मनुष्यता को स्थापित करने हेतु जागरूक किया जा सके।

दलित और मुस्लिम लेखिकाओं ने कथा-साहित्य में अपने लेखन के माध्यम से जीवन के संघर्ष को सामाजिक सरोकार से जोड़कर अनोखे शिल्प और भाषा की सघन बुनावट के जरिए किस तरह गढ़ा है उसका गहनता से विश्लेषण कर खोलना तथा दलित एवं मुस्लिम लेखिकाओं के कथ्य एवं शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन करना व कलात्मक उपलब्धियों को उजागर करना है।

इसके अलावा मुख्य उद्‌देश्य है कि मेरे इस शोधकार्य से आने वाली भावी पीढ़ी लाभान्वित हो। उनका ज्ञानवर्धन हो तथा दलित समाज और मुस्लिम समाज व स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु जागरूकता उत्पन्न हो सके, साथ ही इन समुदायों के प्रति गलत मानसिकता रखने वाले लोगों के दृष्टिकोण में सकारात्मक सुधार हो।

प्रस्तावित शोध विषय हेतु शोधप्रविधि-

'दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित का तुलनात्मक अध्ययन' सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होगा। इसके विविध आयाम दिखाई पड़ते हैं। इनके कथा-साहित्य की अभिव्यक्ति को समझने और उजागर करने तथा सामाजिक पाठक से रूबरू कराने एवं आम-जन तक पहुंचाने हेतु गहन एवं समग्र दृष्टिकोण से गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता होगी।

अतः प्रस्तावित शोधकार्य में समाजशास्त्रीय पद्धति, अन्वेषणात्मक पद्धति , विश्लेषणात्मक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन आदि के साथ-साथ साहित्यिक सर्वेक्षण, शोधपत्र, मैगजीन, पत्र- पत्रिकाएँ, पुस्तकें, इन्टरनेट आादि का उपयोग किया जायेगा।

पूर्ववर्ती शोधकार्य का विवरण एवं शोध विषय की मौलिकता-

शोध विषय के चयन हेतु साहित्य सर्वेक्षण किया तथा भिन्न-भिन्न संस्थानों तथा इन्टरनेट के ज़रिए प्रस्तावित शोध विषय की खोज हेतु आंकड़ों का संकलन किया। इस दौरान मैंने **'समकालीन कथा-साहित्य में नासिरा शर्मा का योगदान'** (शोधार्थी-संगीता, ए0 एम0 यू0, अलीगढ), 'सुशीला **टाकभौरे के साहित्य में दलित महिला चेतना'** (शोधार्थी-सरिता, कोटा विश्वविधालय, कोटा), **'मेहरून्निसा परवेज के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त जन-जीवन**' (शोधार्थी-जुनैद अन्दलीब साजिद, ए0 एम0 यू0, अलीगढ), **'समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित मुक्ति-संघर्ष'** (शोधार्थी-इकरार अहमद, ए0 एम0 यू0 अलीगढ़) आदि पूर्ववर्ती सम्पन्न शोधकार्यों को देखा और अध्ययन किया लेकिन मेरे प्रस्तावित शोध विषय 'दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' के सन्दर्भ में कोई भी शोधकार्य अथवा शोध प्रबन्ध प्राप्त नहीं हुआ। अतः मेरा शोधकार्य पूर्णताः मौलिक तथा नवीन होगा। मैं अपने शोधकार्य को प्रामाणिक, रोचक, तथ्यपरक तथा विश्वसनीय बनाने का प्रयास करुंगा और मुझे आशा है कि विभाग मेरे प्रस्तावित शोध विषय पर शोधकार्य करने की अनुमति प्रदान करेगा।

प्रस्तावित शोध विषय के अध्यायों की रूपरेखा -

भूमिका-

पहला अध्याय - दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

1.1 दलित लेखिकाओं के कथा साहित्य का वैचारिक दृष्टिकोण

1.2 मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का वैचारिक विकास

दूसरा अध्याय - दलित लेखिकाओं के कथा-साहित्य का कथ्य विश्लेषण

2.1 प्रमुख दलित लेखिकाओं का कथा साहित्य : एक परिचयात्मक दृष्टि

2.2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित दलित समाज व उनका जनजीवन

2.3 राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित दलित समाज की स्थिति

2.4 दलित स्त्रियों की स्थिति व उनका जीवन-संघर्ष

तीसरा अध्याय - मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का कथ्य विश्लेषण

3.1 प्रमुख मुस्लिम लेखिकाओं का कथा साहित्य : एक परिचयात्मक दृष्टि

3.2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित मुस्लिम समाज

3.3 राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित मुस्लिम समाज

3.4 मुस्लिम स्त्रियों का जीवन व उनकी विभिन्न समस्याएं

चौथा अध्याय - दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण

4.1 दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य की कथ्यगत समानताएँ -

4.1.1 सामाजिक जीवन-चित्रण

4.1.2 सांस्कृतिक जीवन-चित्रण

4.1.3 धार्मिक जीवन-चित्रण

4.1.4 राजनीतिक जीवन-चित्रण

4.1.5 आर्थिक जीवन-चित्रण

4.1.6 शैक्षिक जीवन-चित्रण

4.1.7 स्त्रियों की स्थिति व उनका जीवन-चित्रण

4.2 दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य की कथ्यगत असमानताएँ -

4.2.1 सामाजिक जीवन-चित्रण

4.2.2 सांस्कृतिक जीवन-चित्रण

4.2.3 धार्मिक जीवन-चित्रण

4.2.4 राजनीतिक जीवन-चित्रण

4.2.5 आर्थिक जीवन-चित्रण

4.2.6 शैक्षिक जीवन-चित्रण

4.2.7 नारी के विविध रूप और उनकी समस्याओं का चित्रण

पांचवा अध्याय - दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त कलापक्ष का **तुलनात्मक अध्ययन ।**

5.1 दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य की शिल्पगत समानताएँ -

5.1.1 भाषा

5.1.2 शैली

5.1.3 बिम्ब

5.1.4 सौंदर्य मूल्य

5.1.5 संवाद योजना

5.2 दलित और मुस्लिम लेखिकाओं के कथा-साहित्य की शिल्पगत असमानताएँ -

5.2.1 भाषा

5.2.2 शैली

5.2.3 बिम्ब

5.2.4 सौंदर्य मूल्य

5.2.5 संवाद योजना

उपसंहार-

परिशिष्ट

- आधार ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- पत्र-पत्रिकाएँ
- विश्वकोश
- शब्दकोश
- साक्षात्कार
- प्रश्नावली
- वेबसाइट्स

नोट-प्रस्तावित शोध प्रारूप मे निर्देशक की सलाह से 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधारग्रंथ-

1. शर्मा, नासिरा, जिंदा मुहावरे, वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 2010
2. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मँगनी,किताबघर प्रकाशन, नई-दिल्ली, 2010
3. शर्मा, नासिरा, शाल्मली,किताबघर प्रकाशन, नई-दिल्ली, 2013
4. रानी 'मीनू' रजत, हम कौन हैं?,वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 2012
5. परवेज, मेहरून्निसा, उसका घर,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई-दिल्ली, 1972

6. परवेज, मेहरून्निसा, कोरजा,वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1997

7. टाकभौरे,सुशीला, तुम्हें बदलना ही होगा,सामयिक प्रकाशन, नई-दिल्ली, 2015

8. टाकभौरे,सुशीला,नीला आकाश,विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर, 2013

9. दिसोदिया, रजनी, चारपाई, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

10. भारती, अनीता, एक थी कोटेवाली, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली 2012

11. टाकभौरे,सुशीला, संघर्ष, शरद प्रकाशन, अहमदाबाद, 2006

12. परवेज, मेहरून्निसा, एक और सैलाब, आर्य बुक डिपो, दिल्ली 1990

13. बैसंत्री, कोशल्या, दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन, 2012

14. शर्मा, नासिरा, पत्थर गली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

सहायकग्रंथ-

1. मधुरेश,हिंदी उपन्यास का विकास,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014

2. मधुरेश,हिंदी कहानी का विकास,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014

3. डॉ0 नागेंद्र (सम्पदाक),हिंदी साहित्य का इतिहास,मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2009

4. नसरीन,तस्लीमा,औरत के हक में,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2008

5. खॉ ,डॉ0 मो. फिरोज, मुस्लिम मानस और हिंदी उपन्यास,आनंद प्रकाशन, दिल्ली , 2003

6. गोयल, डॉ0 अनिल, हिंदी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका,आर्थान पब्लिशिंग हाउस,नई-दिल्ली , 1985

7. राजकिशोर, भारतीय मुसलमान मिथक और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1993

8. लाल, प्रो0 चमन, दलित साहित्य का मूल्यांकन, राजपाल एंड संस, 2012

9. भारती, कंवल, दलित साहित्य का स्त्री वादी स्वर, के. के. प्रकाशन, 2014

10. समकालीन कहानी कथ्य एवं शिल्प, ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़,1990

11. शानू, मोहम्मद, आलोचना की नई दृष्टि, वाड्मय बुक्स प्रकाशन, अलीगढ़, 2017

पत्र - पत्रिकाएं-

1. हाशिये की आवाज, डा0. भिनसेन्ट एक्का, इंटीग्रेटेड सोशल इनिशिएटिव्स, नई दिल्ली, जुलाई 2020

2. ई-जर्नल

वेबसाइट्स -

Educationjournal.org

Shodhganga.inflibnet.ac.in

Sanofsopan.blogspot.com

Samalochan.blogspot.com

www.bbc.com

lib.unipune.ac.in

www.forwarpress.com

Wikipedia.org

www.pravakta.com

www.facebook.com

hindi.sahityavimarsh.blogspot.com

m.sahityakunj.net

gadyakosh.org

amp.bharatdiscovey.org

www.hindisamay.com

www.mgutheses.in

विश्वकोश

शब्दकोश